भाजपा मंत्रियों पर खेलेगी दांव

पहले पेज से जारी...

प्रदेश भाजपा ने जो पैनल तैयार किया है उनमें भिंड से अशोक अर्गल और लाल सिंह आर्य, सागर सुधा जैन, भूपेंद्र सिंह, बालाघाट ढाल सिंह बिसेन, रेखा बिसेन, मंदसौर लक्ष्मीनारायण पांडे, कैलाश चावला, चेतन कश्यप, बैतूल से दावेदार के तौर पर ज्योति धुर्वे, टीकमगढ से हरिशंकर खटीक, गोपाल राय, खजुराहो से रामकृष्ण कुममरिया, धीरज पटैरिया, सीधी से गोविंद मिश्र के नाम पैनल में शामिल हैं.

दमोह - उमा को घेरने की योजना

भाजपा ने कांग्रेस के दिग्गजों के साथ-साथ पूर्व मुख्यमंत्री और भाजश नेता उमा भारती को घेरने की योजना बनाई है. पार्टी की नजर दमोह सीट पर है, जहां से वो यह मानकर चल रही है कि उमा भारती चुनाव लड सकती हैं. भाजपा के पास इस सीट पर जिताऊ उम्मीदवार का टोटा है, लेकिन उसने उमा के मैदान में उतरने पर गैर लोधी उम्मीदवार उतारने का मन बना लिया है. कांग्रेस ने यहां से भाजपा के टिकट पर पिछला चुनाव जीतने वाले चंद्रभान सिंह को उम्मीदवार बनाकर भाजपा के जातीय समीकरण गडबडा दिए हैं.

होशंगाबाद - प्रहलाद-सरताज

भाजपा ने होशंगाबाद सीट पर प्रहलाद पटेल की औपचारिक घरवापसी सुनिश्चित नहीं होने के बावजूद उन्हें उम्मीदवार बनाने पर गंभीरता से चर्चा की है. होशंगाबाद क्षेत्र के कार्यकर्ताओं का हवाला देकर केंद्रीय नेतृत्व ने दिल्ली तक जो फीडबैक पहुंचाया है उसमें मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष दोनों ने इस बात पर सहमति जताई है कि विधानसभा चुनाव में नरसिंहपुर में भाजपा का सूपडा साफ करने में पटेल बंधुओं की भूमिका अहम रही और भाजपा में लौटने की स्थिति में उस वक्त उनके साथ नहीं गया कार्यकर्ता नाराज हो सकता है और इस मामले में वह जोखिम लेने के लिए तैयार नहीं है. इस सीट पर कांग्रेस के संभावित उम्मीदवार सुरेश पचौरी को घेरने के लिए भाजपा ने रामपाल सिंह से बेहतर सरताज सिंह को माना है, जिन्होंने खुद बैकफुट पर आते हुए साधना सिंह का नाम उछालकर राज्य की राजनीति में अपने को और मजबूत करने की चाल चली थी. लेकिन दांव उलटा पड जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए. सरताज को प्रदेश इकाई जिताऊ उम्मीदवार मानकर चल रही है.

प्रहलाद पटेल

रंजना बघेल

धार - रंजना-मुकाम

धार से कांग्रेस के घोषित प्रत्याशी गजेंद्र सिंह राजूखेड़ी के खिलाफ भाजपा मंत्री रंजना बघेल को चुनाव लड़ाना चाहती है, लेकिन रंजना ने अपने पति मुकाम सिंह की जीत सुनिश्चित करने का भरोसा मु यमंत्री को दिलाया है, जिसके बाद मुकाम भाजपा को किस मुकाम पर ले जाएंगे, यह देखने की बात होगी.

गुना - नरोत्तम मिश्रा

सिंधिया को घेरने के लिए भाजपा ने ब्राह्मण उम्मीदवार के तौर पर पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा को चुनाव लडाने का लगभग मन बना लिया है. परिसीमन से प्रभावित डबरा सीट छोडकर नरोत्तम ने दतिया से चुनाव लडा और जीत हासिल की. भाजपा की योजना सिंधिया के खिलाफ ब्राह्मण उम्मीदवार उतारने की इसलिए है,क्योंकि वह यह मानकर चल रही है कि पिछले चुनाव में हरिबल्लभ शुक्ला ने सिंधिया की जीत का अंतर कम कर दिया था, इस बार ब्राह्मणों को एक बार फिर लामबंद करने की योजना है.

छिंदवाडा - कैलाश विजयवर्गीय

भाजपा के पास छिंदवाडा में भी जिताऊ उम्मीदवार का टोटा है. यहां से मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का नाम सुर्खियों में है, जिन्होंने चुनाव लड़ने की इच्छा जताई है. यदि मुख्यमंत्री ने इसे हरी झंड़ी दे दी तो भाजपा यह जोखिम लेने को तैयार है. इस सीट पर एक और मंत्री गौरीशंकर बिसेन ने भी कमलनाथ को चुनौती देने का मन बनाया है.

रीवा - चंद्रमणि-राजेंद्र

ब्राह्मण बहुल रीवा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस ने पिछला चुनाव हार चुके सुंदरलाल तिवारी पर एक बार फिर दांव खेला है. भाजपा तिवारी को शिकस्त देने के लिए खनिज मंत्री राजेंद्र शुक्ला को प्रत्याशी बनाना चाहती है, लेकिन शुक्ला ने वर्तमान सांसद चंद्रमणि त्रिपाठी को जिताने की गारंटी लेकर अपनी दावेदारी कमजोर करने की कोशिश की है. पार्टी को मिले फीडबैक के मुताबिक चंद्रमणि के खिलाफ माहौल बेहतर नहीं है, ऐसे में शुक्ला ट्रंप कार्ड साबित हो सकते हैं.

पहले पेज से जारी...

लोकतंत्र पर फिर....

जब तालिबानों को लगा कि अब वे घिर गए हैं, तो उन्होंने पाकिस्तान सरकार के सामने समझौते का चारा फेंका और सेना-आईएसआई के दबाव के कारण जरदारी ने उनसे समझौता कर लिया. स्वात में शरीयत लागू करना तालिबान और अलकायदा की जीत मानी जानी चाहिए. तालिबान और अलकायदा इतने से संतुष्ट होने वाले नहीं हैं. वे पूरे पाकिस्तान में शरीयत लागू करने के लिए हिंसा का सहारा लेंगे, जिसकी कीमत पूरी दुनिया चुकाएगी. जरदारी ने रही-सही कसर नवाज शरीफ के खिलाफ मोर्चा खोलकर भी पूरी कर ली है, जबकि जरदारी केवल सिंध के प्रतिनिधि ही माने जाते हैं. वहीं,नवाज शरीफ पंजाब का प्रतिनिधित्व करते हैं. यह तो पूरी दुनिया जानती ही है कि पंजाब के लोग पाकिस्तान की व्यवस्था पर एक अर्से से काबिज हैं. सेना में भी बहुमत पंजाबियों का ही है.

चुनावी होली

लीडर नंग-धड़ंग सब, मचा टंग-हुड़दंग।
अंग न पोतो रंग अब, चढ़ा चुनावी रंग।।

जय चुनाव आयोग कृपाला/ जय 'स्वामी', जय-जय 'गोपाला'। जय भविष्य के नाथ प्रवीना/ जयति-जयति 'चावला नवीना'। जय-जय-जय आयुक्त 'कुरेशी'/ जय हो-जय हो डेमोक्रेसी। जय जनगणमन भाग्य विधाता/ जय पहचान पत्र के दाता। जय पैदल, साइकिल, रथ, मोटर/ जय हो-जय हो लीडर-वोटर।

है चहुं दिशा चुनावी होली/ आई मत-मंगन की टोली। रंग दो बालम, चोली-चीरा/ नेता गावत राग-कबीरा। पांच चरण, मुख-भुजा अनंता/ खेलत फाग, निपोरत दंता। छोटी टोली, भागमभागू/ है आचार संहिता लागू। देखहु होरिहारन का ठेका/ हर्बल-वर्बल रंग अनेका।

कोई ओढ़े हरा दुपट्टा/ भीतर पिचकारी सम कट्टा। कोऊ अबीर तन पर मलि धावा/ कोऊ केसरिया रंग लगावा। कोऊ नीला सूट सिलावा/ कोऊ कीचड़ में लथपथ आवा कोऊ तिरंगा पोतल बाटे/ कोऊ गुलाबी चड्डी गांठे। कोलतार मुख, गाल गुलालू/ गदहा, घोड़ा, खच्चर, भालू। लप्पूझन्ना अरू फंटूसा/ यह होली का दिव्य जुलूसा।

आए द्वार वोट के रसिया/ लिपटें गले, लगें गुड़-हंसिया। मीठे बोल, अधर मुसकाना/ सब गुंडा भे संत समाना। जनता फादर, जनता अम्मा/ लीडर नाचें छम्माछम्मा। यूथ-बूथ का गावें फगुआ/ टल्ली भे चुनाव में बबुआ। रहे बनावत पांच बरीसा/ खेलत रंग, झुकाए शीशा।

फागुन गरम, नरम प्रत्याशी/ सिंह राशि भे कन्या राशि। कोऊ भाईचारा दिखलावे/ कोऊ माइनॉरिटी को फुसलावे। ओबीसी, एससी पटियावे/ जाति-जाति की आरति गावे। कोऊ बाभन, ठाकुर समुझावे/ कोऊ जाट, भूमिहार रिझावे। कोऊ होलिका दहन सजावे/ पग-पग होली-मिलन करावे।

कर्म 'भयानक' सब जग जाना/ तबहु 'हास्य' करि लोक लुभाना। अति उत्साह 'वीर रस' भांती/ 'अद्भुत' सब साथी-संघाती। रूप विरोधिन 'रौद्र' दिखावा/ कहि कुशब्द 'वीभत्स' बनावा। लंच-मंच 'शृंगार' अनोखा/ 'करुण'-'शांत', पर देवत धोखा।

राजनीति में नव रस पेखा/ स्थायी भाव एक नहिं देखा। याद न आवे पिछली होली/ चेंज सकल गल, दल, बल, बोली। बदल लिहिन वाहन, घरवाली/ जिज्जा नए, नई अब साली। धन्न-धन्न हैं भाग हमारे/ होली में प्रभु गांव पधारे।

बीडीसी सदस्य, परधाना/ पूजत चरण, करत जयगाना। वर्कर सकल खड़े कर जोरे/ ठेकेदार कहत प्रभु मोरे। रही अदावत जहां पुरानी/ उनहुन से अब हुक्का-पानी। नाथ कहत मोहिं देहु जिताई/ जितते खत्म करब महंगाई।

सुनि पब्लिक यह हंसत ठठाई/ अब तक कहां रह्यो मम भाई। 'सूर्यकुमार' कहें कर जोरी। जय हो-जय हो सबकी होरी।

सात कलर बॉडी लसै, फेस बसे लंगूर।
होली में लीडर फंसे, रंगो उसे भरपूर।।
गले, लगें गुड़-हंसिया।
मीठे बोल, अधर मुसकाना। सब
गुंडा भे संत समाना

नीलामघर में हैरान राजनीति और खेल

चुनावी चौपाल

हमारे यहाँ दो विषयों के विशेषज्ञ हर घर में मिलते हैं। एक क्रिकेट और दूसर राजनीति। खासकर चुनावी राजनीति। दोनों का गणित है। गणित में हम सबसे आगे हैं। सेफोलॉजिस्टों से लेकर रामलोटन तक और सुनील गावसकर से लेकर फन्ने खां तक अपनी अंतर्प्रेरणा से भविष्यवाणियाँ करते हैं। कुछ सच हो जातीं हैं, कुछ गलत। इसबार क्रिकेट और चुनाव का पर्व एकसाथ पड़ रहा है। दोनों में नीलामियाँ चल रहीं हैं। अप्रेल में क्रिकेट की बहार होगी। और चुनाव का मेला भी लगेगा। आईपीएल का टी-ट्वेंटी चलेगा। दिन में चुनाव और रात में क्रिकेट। चैनलों की चाँदी। ड्राॅइंग रूम गुलज़ार होंगे। दोनों मैदानों में गठजोड़ों के चर्चे हैं।

1952 से 1971 तक भारत की राजनीति एकसार कांग्रेसी वर्चस्व की कहानी थी। तब अपना खेल हॉकी हुआ करता था। 1975 से एकदिनी क्रिकेट का वर्ल्ड कप शुरू हुआ। उन्हीं दिनों इंदिरा-विरोधी आँधी आई। 1977 में पहली बार जनता परिवार कुर्सी पर बैठा। 1980 और 1984 में दो नकारात्मक वजहों से कांग्रेस को दिल्ली की कुर्सी पर अकेले बैठने का मौका मिला। इसबीच 1983 में कपिल के डेविल वर्ल्ड कप उठा लाए।

उधर राजनीति में भी बुनियादी बदलाव आया। 1989 के बाद से गठबंधन राजनीति का महत्व बढ़ा है। पर कितना और किस तरह, इसका अंदाज़ किसी को नहीं है। अलबत्ता 50-60 सांसदों की जमात सरकार को नचा सकती है। द्रमुक और अन्ना-द्रमुक जैसी पार्टियाँ क्षेत्रीय से राष्ट्रीय बन गईं। अब सिर्फ एक सदस्य की पार्टी को मुख्यमंत्री पद मिल सकता है। 2004 के चुनाव के पहले उम्मीद थी कि एनडीए को बहुमत न भी मिले पर जोड़-तोड़ से उसकी सरकार बन जाएगी। राष्ट्रीय स्तर पर एक ही गठजोड़ था। अब दो गठजोड़ हैं। कांग्रेस ने राष्ट्रीय गठजोड़ न बनाने का एलान किया है, पर परोक्ष गठजोड़ है।

आडवाणीजी का जिन्ना-दर्शन और अटल बिहारी का राजधर्म उपदेश देश-काल के हिसाब से बने और बिगड़े। चुनाव की राजनीति में सत्ता पाना सबसे बड़ा राज-दर्शन है। पर, जनता सत्ता देने के लिए वोट नहीं देती, राज-व्यवस्था चलाने के लिए कुछ वक्त की सत्ता देती है। सामाजिक न्याय के आग्रहों पर बनी सरकारें अपने घर भरने के जिस राजनैतिक-दर्शन पर चलीं उसे जनता ने खुद देखा। समझदार राजनेताओं को जनता की इच्छा को समझना चाहिए।

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८

cmyk